इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५ श्लोक २० (२०)

ग्रंथ नाम जानकी स्वयंवर.

विषय मराठी काव्य.

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीमज्जनार्दनगुरुभ्यो न
मः ॥ श्रीरामात्मने नमः ॥ ॥ कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्ष
रं ॥ आरुह्य कविताशाखां वंदे वाल्मीकिकोकिलं ॥१॥ रामरामे
ति रामेति रमे रामे मनोरमे ॥ [illegible] नन तुल्यं रामनाम वरा
नने ॥२॥ रामाय रामभद्राय [illegible] रघुनाथाय नाथा
य सीतायाः पतये नमः ॥ [illegible] गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महे
श्वरः ॥ गुरुरेव परं [illegible] नमः ॥४॥ ॐ नमो ॥५॥
गणनायका ॥ ब्रह्मविष्णुईशोका [illegible] कैवल्यपदप्रदायका विधा
यका सुविद्या ॥१॥ अज्ञानतमोपह भास्करा प्रबोधसमुद्रोल्हास
निशाकरा संभूति दुःखविघ्नहरा लंबोदरा तुज नमो ॥२॥ देवा
तुझी दिव्यदृष्टी कारुण्यामृतें रसवृष्टी वोळो निमन्मचातके तुष्टी ॥ न
दुःखुंजटी पैकेरू ॥३॥ येसे परीसोनि बाळकवचन तुष्टले

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

स्वामि गजानन ने । दिधला वर पुर्ण संपुर्ण । ग्रंथ निर्माण । करणा
यीं ॥ ३ ॥ ज्ञाकुनि गज मुरव प्रसन्न ना । श्रेनेंज नार्दन कुचित्ता ॥
ने व्हो स्तुध रिचिचा ॥ ज्ञान माता वर्णनि ॥ ४ ॥ आता ॐ नमो
जगदंबिके । रचकि पद्चरणा [illegible] के । सवभाय शोक निवा
रके व्यवहारको दुर्बुद्धी ॥ [illegible] विष्णु महेशाना । तूं होसी
वर्ण्य सुरगणा ॥ ते यज्ञव्य [illegible] जनार्दना । पैर्वर्पना केमा
तु ॥ ६ ॥ परिसो नि व्यपस [illegible] बा आनंद त्रिभुवनी ॥
दिधला जनार्दना लागुनि ॥ आं: करणी सोर स्तु ॥ ७ ॥ बु
बा प्रसाद पंकज पराग । पावला मन्ह नो भृंग । मग ग्रंथा यीं ।
अतिचांगु ॥ आदरु स्सहांगु ॥ उदैला ॥ ८ ॥ तेपें आनंदे क
रुनि । प्रवर्तलों श्री गुरु स्तवनि । जे विबालका नक्षस्वर

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

ति । अनिश्चयत्ति ॥ हूं म्हणासु ॥ १० ॥ ॐ नमो श्रीसद्गुरु ॥ कैवल्य
दानि जो उदारु ॥ सर्वव्यापक निरंतरु ॥ वरद वरु सकळी
पै ॥ ११ ॥ देवा तुझा प्रसाद वसंतु ॥ पाल्हवियों मन्मनवनाची
तु । स्वगुणें सुरवाडिकी तु [illegible] पक्व तु । सज्जना ॥ १२ ॥ बुधी
वल्लि सकोमळि ॥ पद पुष्प[illegible] फळि ॥ उद्योनि येति बहळि
संतमंडळि सुरवाति ॥ १३ ॥ [illegible]चा कोकिळ पद प्रासीं । व ॥ ३
१२ ॥ द ति उपतिज्ञ्का सि ॥ [illegible] श्रोत्र श्रवणासि ॥ अति पा
डे सि संतोषु ॥ १४ ॥ स्वकिय हृदयपंकजि ॥ मानस मधुक
र रमे सहजी ॥ येसें करावें श्रीगुरुजीजी । पैं स्वकाजी अतुर
पु ॥ १५ ॥ यैसें पदि सोनियां विनवणें ॥ जनार्दना स्वामी पो
प्रारंभ करीं अंत:करणें । ग्रंथ रचने आगाधु ॥ १६ ॥ येसें

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

2A

गुरुसोमवंशनामनकरा ॥ श्रवणद्वारा गेले व्यापार ॥
मानससोमकांतिपाझर ॥ बुधीचे योर ॥ पावले ॥१७॥ तेन
सर्वरनेह हृदयस्थिति ॥ वदन द्वारा बाहिर निघति ॥ तेव्हा
वृपणें बवेव ति ॥ पै बुधी [illegible] पडीसावें ॥१८॥ आतां न
मनसंतज्ञना ॥ जे [illegible] ज्ञाना ॥ छेदकर्मवबंध
ना ॥ जनार्दना ॥ स्वदृष्टी ॥ [illegible] जे निसान दैकधाम ॥ जे भक्त
जन पुर्णकाम ॥ जयांचे [illegible] चरणारविंदिं नी:सीम ॥
भक्तिप्रेम ॥ अनन्यभावें ॥२०॥ जे ज्ञानमूषणांमंडित ॥
जे उर्मीनेभावनारवंडित ॥ जे मानसिंघरवंडित ॥ पै चिन्नी
नप्वरूप ॥२१॥ तयां माझा नमस्कार ॥ अति नम्रता अपचा
रु अस्मद्ग्रंथीं सादर ॥ कार निष्पादर परीसिजे ॥२२॥

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(3)

रो ॥

तुम्हवां चित्तिं साचुधान ना । अरिठ पजे अस्मत्पुर्वपुण्य ना ।
तरि परमार्थकि छिब्या सा । कथा अनाचु घी पावे ॥ ३३ ॥ येसि
या परिसो निमद्धु वचना । संतम्हणति जनार्दना । पैंनि
रोपिं त्राद्धरला । करि काम नाम पुर्ण हे ॥ ३४ ॥ येसें ऐकाडुनि
संतवचना मन न । आनि [illegible] ाद सन्तुष्ठ । प्रेमभावें स्विव
दन ॥ बोसंडु न उठ्ठाति ॥ ३[illegible] लेपणा आनंद भरिता ॥ छ
नुवाद तश्रीराम कथा ॥ [illegible] कर चंदी माथां ॥ होयसांग ॥ ३ ॥
ना त्रा किसि ॥ ३६ ॥ ध्रु ॥ आइका रम्य रामकथा ॥ त्रैलोक्यपा
वन पुण्य सरिता ॥ भावें श्रवण स्नान करिता । सायोज्य ता
लोकडिं ॥ १ ॥ ध्रु ॥ जे कथा तापत्रय शमिनि । दुर्भव दुरी तद्दमि
नि । जे श्रीराम गुणानुवादिनि । आनंदद्नी । विश्वरूपा ॥ ३७ ॥
जे सकळांकष्यों वर पावनि । जे दुराराधिचे वीनि । जेसें

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

3A

सारतम्रसंजीवनी। जेपेंअवनि। तारका।। २८।। जोवर्णितां
चतुराननां। पातालिंसहस्त्रवदनां। षडाननयेसुरगणां
जोईश्वराना। सुखकरि।। २९।। जोसर्वोपाडिसारभूतां। जो
पवित्रकरिकलिमळेनां। जेपावविश्रमपदतां।। तोहे
कथा। रामायणी।। ३०।। जेश्रीराम नाम गुणमहिमा। श्रोत्र
मनःश्रवणाअनिश्रमा। [illegible]निपापुर्णकामा। निजधा
मा पावविं।। ३१।। तेहे श्रीरामकीर्तनिं। श्रीरामपदकंजष
ट्पदजनीं। श्रवेश्रोनियांश्रवणी। अंतःकरणीं। सुखकरू
।। ३२।। ७।। परीसाज्ञानकिसेवरं। भावकथाअंतिमनो
हर। भावनारूपेंअहिकपर। पैंवरवरादायका।। ३३।। ।।
आतांययाउपरि। कथाहेतार्थमनोहरि। भरथखंडामा

A Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(५)

ज्ञाति ॥ अवनीवरि ॥ जंबुद्विपीं ॥ ३४ ॥ चैदर्भदेसिं विदेहपुरी ॥
आत्मा विदेहराज्य करि ॥ शुधसत्वात्मक व्यापारें ॥ लोकत्वा
री यर्चपुके ॥ ३५ ॥ नगरवर्णीनां नरमनोहर ॥ असंदेहदे
हपूर ॥ रक्षक अभिमानिसधर ॥ अन्तिवरविन चतुष्टय ॥ ३६ ॥
गोणनाम जनकन्यपु ॥ आउमकीरिपानुकंपु ॥ तेथ असमवर्व
र्णनारोपु ॥ व्यर्थ आरोपु [illegible]र ॥ ३७ ॥ याज्ञाणिनगर चर्प
नी ॥ नदिघे विपरीसाविन[illegible] ॥ श्रीरामगुणानुवादनी ॥
होईल म्हणोनि ॥ विलंबु ॥ ३८ ॥ असोते विदेहपुरदेहि ॥ प
रमलिपरमातेथे देहि ॥ पावन करावया महि ॥ पै भयछाहि
नाचाना ॥ ३९ ॥ ईहामुत्रफळ भोगविरागीं ॥ जेसि सुविद्या
निफजे चांगी ॥ तेसि श्रीरामआत्मानंदचेगी ॥ जनकांगीं
प्रकट हि ॥ ४० ॥ आनपाहा तांकोसि गमळी ॥ कायविश्वज

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

न माउलि ॥ देखोनि भवाग्नीतानली ॥ नयांपाचळि ॥ सुखचंद्रानि ॥ ५
किंवा श्रीरामभानसमुकुळा ॥ चिकाशानाचंद्रकळा ॥ किं विष्णुचर
णप्रेमळा ॥ सिंधुबाळा अवतरलि ॥ ४३ ॥ किं श्रीरामपत्कजीचार
ळ:पराणु सेवावयाधरिला देह देचिमाणु ॥ किं अज्ञानजनांआ
समार्गु ॥ अति निर्गमु देखीना ॥ ४४ ॥ किं वा सुरगणमानसकु
मळा ॥ चिकाशकारिणीपा[illegible]कुळा ॥ किंरा[illegible]स संकुळ तमाचाबळा ॥
छेदून अबळा पातलि ॥ ४५ ॥ [illegible]या प्रगटलि विदेहतनया ॥ जेबो
लीजे आदिमाया ॥ पै त्रैलो[illegible]च्या ॥ दिव्यकाया ॥ जानकी ॥ ५
तो सुखकारि धन्यदिवसु ॥ सुरनरमानसा उल्हासु ॥ जेविं
हेळ्मां चंद्रकळांसि ॥ सिंधुजळीं वसु ॥ उन्हंबळे ॥ ४६ ॥ परमधन्य
तो विदेह राजा ॥ जेथ प्रगटलि आदिबिजा ॥ जे पै बोलि जे पद्म
जा ॥ देवा काजा मेथलि ॥ ४७ ॥ भाग्यजनकावें समर्थ ॥ वदनीं

A joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

वान्वेसिध्धकथ्य । जयाविश्वभानाथ्यपद्य । स्वरूपेंसस । लाधला
॥४०॥ सितायोगें तोजनतु । पावेल विश्वनायकु । भक्तिसंगें
सज्जनलोकु । पैं परलोकु । पावतु ॥४९॥ योसितेजनकवे
ळा । ळावण्येंवाढेवि । त्राळा । तोचिनिर्मळा । चंद्रकळा । निर्धा
प्रबळावध्रीपावे ॥५०॥ ते... तांनिजसद्दनि । परीवततस
निवजनीं । जनकाध्यानंद... पाहातां नयनि । नसींटे
५१ ॥५१॥ ध्यचलोकितांचि दे... ॥ सगुणसुंदर । ध्यवनिल ५
नया । सुमनदृष्टीआन... ॥ करावया । नधांवे ॥५२॥
जेसा तोनहवेता । चिसरोनिइंद्रियादि व्यवहारता । ध्यानेंवी
नितुर्यावस्था । तेंसपासिना । विदेहि ॥५३॥ कांसुंदरसगुण
सुलक्षणीक । वधपणींयेकु छत्रें येक । जननिनां विसंपे
बाळक । तें बिडरनका जानकिये ॥५४॥ कीं कृपणीं देवें

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(SA)

वें:करणा। नविसंभे वे विले निजधन। तैसे जाणा नाकिं निधा
न। अनंतं गुणग्रहन।। नविसरे।। ५५।। असो ने ये स्रियापरि
नयाजन काचां निज मंदिरिं।। प्रकट रुक्मिणी आदि कुमारि।। जे श्रीह
रि वरुनीया।। ५६।। जननिं जननी आगरु।। तिना ठावण्य ने
लनारु।। ग्राहकु कपास्मान चु [illegible] ल वरु। वराव या।। ५७।। जे
सामुद्रिकां वेंमंडपा।। जे [illegible] तनके भवन। जे स्वरुपक लभूष
णा भूषण।। ते वर्णन कोचि [illegible]।। ५८।। जे वैष्णव विषाद्रील द्दमी
ने अगम्य निगमागमिं।। जि [illegible] नु तनु निज धामिं।। अनंतन
भि वपानितु।। ५९।। जे विष्णु चि निज शक्ति।। जियेचे सुरनर पन्नग
स्त्ति विति। जेकां वंद्य जीज गति।। वरदमुर्ति जनार्दना।। ६०।।
ते जानकि जनक दुहिता। परम लावण्य गुण भरिता। निजधा
मिं रचे ठवां। जगन्माता।। न धाये।। ६१।। जी चिं ब्रह्मीं डें कोंढ

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai.

(6)

किं ॥ रचिले तरि ते नरी तरडी ॥ बाउल्याचौ यासिं ल्हसरूपडीं ॥
पें परवडि ॥ रवेळवि ॥ ६१ ॥ जे घनंता नाकिं विरचामिणी ॥ जें पें २
मा भ्रयां रामा चि रमणी ॥ विषुज नभ न मोहनि ॥ जे स्वामिणी
जनार्दना ॥ ६२ ॥ जे घन गुरु [illegible] परमा ॥ सौं जे विघन य नडो
ळसा ॥ स्त्री पुंनपुंसक ये [illegible] डिवसा ॥ चतुर्विधा ॥ ६४ ॥
ये सि ते जनक नंदनि ॥ ज[illegible] चि निज जननि ॥ संगे सरवी
।६।। या सुवासिणी ॥ दिव्य ये [illegible] गवंतरली ॥ ६५ ॥ तयां समवे ॥६॥
त जानकी ॥ नाना विलास कौतुकीं ॥ अप्रा हे ते बरवरकीं ॥
रवेळे ने टकिं रवेळणी ॥ ६६ ॥ नवल रच ने घर कुटीयाचें ॥
ना.म ये विवेकु गावें ॥ माजि कल्पिनी जसुरवाचें ॥ श्रीरा
माचें मंदीर ॥ ६७ ॥ ते थ हें सतुळी केव रियां ॥ कल्पनाबेस

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai joint project

वीरामास्वामियां। सांगेतपबारसखियां॥ आपणागेसांवी
यांछागुनि॥६८॥ आवाहनादितपचार॥ त्रोड[illegible]त्रहिपरि
कर॥ पुजिस्यद्भावेंरघुचिन॥ स्तविमनोहरान्नसादि॥६९॥
मगजोडुनियांकरांतें॥ सा[ष्टां]गीकरिनमनातें॥ तगेनिचा
लिआसनें॥ स्वस्थैसितें॥ [पद्मा]सनें॥७०॥ नेथहृदयपंकज
सेजारिं॥ श्रीराममुर्तिध[illegible]मि॥ विंतिमुद्राआगोचरि
पैथनरिं। सुखवासेवे॥७१॥ …[त]णोंआनंदसुखभरे॥ देहा
दिस्मरणाविसरे॥ मगसारूपयापरमबळात्कारें॥ आणिनि
स्मरे॥ जाग्रति॥७२॥ नवंनिदसुरियांतवळकैसें॥ परमा
नंदेंपरमघोषें॥ म्हणेजयजयश्रीरामयेसें॥ त्रिवोल्लासें॥
जानकी॥७३॥ म्हणेजयजयजिश्रीरामा॥ सुंदरवर मेघ

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

वयाम्ना। भक्तजनपूर्णकामा। हुं विश्रामा विश्वास्या॥७४॥ ध्या
निध्यान श्रीराम राम। चिंतन चिंतिंतन श्रीराम। वदनि उच्चार
श्रीराम राम॥ नयनि रामा निरखी॥७५॥ श्रवणी श्रवण राम
राम॥ भोजनि जीवनी राम राम। आसनि शयनि राम राम॥
धामी कामी राम विश्रा॥७६॥ राम जाणता राम। रचे खेळता रवे
ळ राम राम॥ बोलणा हा... राम राम॥ सरिखा सोस गत रा
७॥ राम॥७७॥ सरिखा रामु... वत कैसी॥ स्थितो स्थि श्रीरामा॥७
चे पंडीसे॥ खेळता मूर्ण... वसे॥ को चेष्टा से॥ तो रामु॥७८॥
ऐसे पुसा तिसरि विज्ञाने। नवजानकि बोले हास्यवदने। स
र्व व्यापकु रामु जाणो॥ सकळ करणे रामाचे॥७९॥ रामुज
न रामु विजन॥ रामुवन निरंजन॥ सर्व सार्वि परिवळ जाणा।
कार्य कारण। रामुचि॥८०॥ ध्याता रामु विधाता रामु। कनारा
ना

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai.

मुभक्तीरामु ॥ दातारामु देतारामु ॥ आत्मारामु सर्वांचा ॥ ८१ ॥
येसें जानकीचें वचन । परिसोनि सखियां समाधान । म्हणती
न व्हे हें सामान्य ॥ परनिधान निजशक्ति ॥ ८२ ॥ तें जाणोनि वैं
जानकीया ॥ मन म्हणे लिया [illegible] सखियां । ज्ञानविरहिणी
चवनाईयां ॥ आनागया ॥ [illegible] जे ॥ ८३ ॥ येसी तेजनकन
नया । अवनरखिसुर काय [illegible] नयांनें तोडावया । पैं घावया
बैष्णवि ॥ ८४ ॥ नेसवईजन [illegible] त्वा जविनयानुरूप रवळे
रवेळा । संहारण राक्षसकुळा । [illegible] वेळकाळा दारचाप ॥ ८५ ॥
करि धनुष प्रष्टीभाने । तैसें विसकळा सखियांतें ॥ काष्ट
रवगें प्रडीचहावें ॥ द्वार अध्यांनें आरूढनि ॥ ८६ ॥ सखियां
सिआत्ति सप्रेमें ॥ अंतरघावडिचेनि संभ्रमें । म्हणे जीनी १

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

ठेउ रामें॥ श्रीरामनामें गर्जेचि॥ ८७॥ चिरसी नचिंतजनका
चें॥ देखोनि रवेळणें जानकीत्वें॥ म्हणे श्रीकृष्णन क्षेरूपईचें॥
करिजीवाचें॥ निसलोण॥ ८८॥ नेमाहा मायावैष्णवि॥ वैष्ण
वआवडनिजीवी॥ तयानें पडिले रामभावि॥ आनिगोरचि॥ गो
र चि॥ ८९॥ पढीयेंनिम् ... न॥ सज्जननिजदासस्सम
स्तसंस॥ जेश्रीरामनामवे ... ढन॥ तोहि आवडन॥ जीउये
८॥ से॥ ९०॥ देवब्राम्हणपुज ... ानियेंआतिरोचन॥ वेदशा ॥८
स्त्रनिषण॥ जीवप्राण॥ पढ ... नि॥ ९१॥ जनकायेकुळीनि
येकि॥ पुत्रस्थानिपैं जानकि॥ नारक अहि किपरलोकी॥
अनिविसेरिवं॥ आवडे॥ ९२॥ म्हणोनिस्वपास्वपानियेच
वेगळें नकरीहे हृयानें॥ प्रेमेंआळंगुनि निजहृदयी॥ पैंय

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

दनाचें। चुंबीतु ॥ ७३ ॥ म्हणे हे जानकि आमचा पीता । जान
कि आमचि माता ॥ जानकी आमचि कुळदेवता ॥ परत्र ता ॥
जानकि ॥ ७४ ॥ जानकी दैवं आमचें । जानकि जीवन जीवाचें ॥
जानकि तारुं भवार्णवाचें ॥ [illegible] परत्रीचें ॥ निजधाम ॥ ७५ ॥ जा
नकी आमचें कुळ [illegible] कि आमचें सुचित्र ॥ जानकी
आमचें निश्चीत ॥ ऐं जीची [illegible] नकी ॥ ७६ ॥ ऐसे हे रुपें निर्म
र। बोसंडे जनकाचें उचर [illegible] निधान निरंतर । भाग्य गो
चर । जानकि ॥ ७७ ॥ आणा सकळा सुहृदांसि ॥ आवडे जा
नकी जीउ ऐसी ॥ इतरां नगरजनासि ॥ प्राण ऐसि ॥ चिसरुवे ॥ ७८ ॥
असो ऐसी ते जेष्टा ॥ सकळ वरीष्टा वरीष्टा ॥ करावया धर्मप्र
निष्टा ॥ वयसा अष्टां वरुषांचि ॥ ७९ ॥ दिव्यरुप तेसि ना ॥ दि

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

व्यअवछेकादिमंडिता ॥ पुर्णापुर्ण पूर्णपर्मसरीं ॥ जेसरिसेना ॥ मा
होल्क्ष्मी ॥ १०० ॥ जेजनार्दना चिजनर्निं ॥ जेजानकिविंचमो
हिनी ॥ नम्य ॥ विदेहा स्वानिजभुवनि ॥ डीदजीवनि ॥ क्रीडन्ति
से ॥ १०१ ॥ जनार्दनुदि[illegible] चिर[illegible]नां ॥ हेपावननामकथा ॥
पैपरीसा विदन्नवी[illegible] ॥ [illegible]यक्षसतीरीकडि ॥ १०२ ॥
॥ श्रसंपुर्ण ॥ ॥ १ ॥ ॥ [illegible] ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥
॥ ८ ॥ ॥ का ॥ परीस ज्ञानचीसे[illegible]कथा पावन परीकरा ॥ सवडु ॥ ८ ॥
रवडुरी सहन ॥ जे परपार[illegible] ॥ १ ॥ ॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥
बा ॥ नायया नंतरे कथा ॥ परीसा विदनचिना ॥ जनकमंदिराजा ॥ हा
लायेना ॥ भवभयत्राना ॥ फनत्राधरु ॥ १ ॥ जो अगवंत्रीपतिकरु
जो पैवाहमळ्वतारु ॥ करुनिक्षत्रकुळांसंहारु ॥ भूमीभारु
उतरीला ॥ २ ॥ जो बांकरप्रसादें स्नानंदु ॥ जो हा ल्लास सकळवि

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(१०)

यासिधु। त्रीबकलाऊनिप्रसादु॥ वधीढाअगाधु॥ सहस्रतांजु
नु॥३॥ जोदुर्गांत्री माहाविष्णुचा। पुत्रजमदग्नि रेणुकेचा।
परिपाळकुगोब्राम्हणांचा। गुर्व त्यासानु धनु॥ ४॥ जो
सकळ तेजाचें तेज। जोसकळ बिजाचें बिज। जोपरमनिजा
चें निज। तोसहज पा[illegible]॥ ५॥ माथांजटा दिव्यप्रभासे।
ज्वळा। कर्णीकुंडलां दिव[illegible]गा॥ हाटी त्रा टिळे अनिद्रिवाग॥
हंड कु मंडळ भेरवळा। यज्ञ[illegible]॥ ६॥ अशींधुत्तधोत्रवोति॥
देह मंडीत रुद्राक्षमाळी। [illegible]रेखीला निजभाळी। अक्ष
माळी। जपमाळा॥ ७॥ सिवाचेघापचा हाती। वर्हानि अखंड
उचारी। धनुषबाण निजकरि। चरणचारी गमन॥ ८॥ न
पोकेजें तपोनीधी। वोळगा तिसिधी सिधी। परमानंद वस्तुधाम्बी॥
वैभिरवधी मागके॥ ९॥ आनंत नानाति चा गोरा विप्रवेषाळा

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(१०)

विदेहगाविं। संगें सुपात्रें ब्रधविं। जेबंर थिं। रुषीचें दें ॥१०॥ जे वेद
शास्त्र पारंगता। जे तपोधने समर्थ। जे ब्रम्हविद्या पुर्णकलीन। देस
मवेतरवोलति ॥११॥ अनेंन सिध संगें मुनि। पैंपातला राजधा
नि। जनकें होरविला दुरुनि। [illegible] येतां चोनि। नमीयुला ॥१२॥ पडे
सांष्टांगी हडवता। [illegible] विसाथा॥ म्हणे जय जय जगं
नाथा। अभिचर्या तां [illegible] ॥१३॥ जय जय शरपागत वछ
ला। नीज दासीं सप्रेमळा। [illegible] ना तुं जीवाळा॥ माया लिळाव
१०।(वतारु ॥१४॥ जय जय जी [illegible] पारामा। जय जय जी पुरुषोत्त ॥०
मा। जय जय जी परमधामा। [illegible] नमा पुरुषा तुं ॥१५॥ जय जय
जी मेघस्यामा। जय जय जी आत्मयारामा। स्त्रिपाळीया संसारश्र
मा। तुं विश्रामा मागवा ॥१६॥ जय जय जी पुर्णकामा। जय जय
निःकामकामा। अगाध तुझा महिमा। श्रुति सीमा न बोलवे ॥१७॥
जय वाढुणैश्वर्यसंपंन्ना। नमन तुझ्या चरणा। नमो आदिना

A joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com